आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 15-01-15

हम भाग्यशाली आत्माओं को ब्रह्मा मुख से ज्ञान देकर हमें ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण बनाने वाले, नई सतयुगी सृष्टि के रचयिता बेहद के बाप ने कहा, मीठे बच्चे - तुम अपने को संगमयुगी ब्राह्मण समझो तो सतयुगी झाड़ देखने में आयेंगे और अपार खुशी में रहेंगे.

शास्त्रों में लिखा भी है कि भगवान ने नई सृष्टि की रचना के पहले ब्रह्मा द्वारा ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मणों की रचना की. अब उसमें ब्रह्मा को सूक्ष्म वतन में बताते है. जब की नई सतयुगी दुनिया इस साकार वतन में होनी हैं तो ब्रह्मा भी यहाँ साकार वतन में होना चाहिए. इस संगमयुग पर परमप्रिय-परमपिता-परमात्मा शिव, यह दादा के तन में आते है तब उनका नाम ब्रह्मा रखते हैं और उनके मुख-मण्डल से हमें आत्मा, परमात्मा और सारी सृष्टि चक्र का आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान देते है. यह ज्ञान को सुनकर स्वयं में धारण करने वाली आत्मा ये ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण कहलाती हैं. भगवान यह ब्राह्मण आत्माओं का सहारा लेकर इस सृष्टि पर सतयुग की स्थापना करते हैं और फिर उनको ही सतयुग का मालिक बनाते हैं. हम वही कल्प पहले वाले ब्राह्मण आत्मायें है अगर यह नशा रहे तो हमें सदा बाप का वर्सा भी याद रहेगा और हमारा खुशी का पारा भी चड़ा रहेगा.

बाबा की आज की मुरली से ज्ञान और योग पर कहे गये कुछ महा-वाक्यों को हमारी आत्मिक अवस्था बनाकर बाप की याद में पढ़ेंगे.

- बाबा कहते हैं रुहानी बच्चों प्रति पुरुषोत्तम संगमयुग पर आने वाला बाप समझा रहे हैं. यह तो बच्चे समझते हैं - हम ब्राह्मण हैं. तुम्हें यह जरूर याद रहना चाहिए कि हम संगमयुगी ब्राह्मण हैं. यह एक बात याद रहे तो भी तुम्हारा बेड़ा पार है. संगम पर तुम बाप से नई-नई बातें सुनते हो तो उसका चिन्तन करना चाहिए, जिसको विचार सागर मंथन कहा जाता हैं. तुम हो रुप-बसन्त. बाप तुम्हारी आत्मा को ज्ञान दे रहे है तो तुम्हें उस पर विचार सागर मंथन कर ज्ञान रत्न निकालने चाहिए.

- बाबा कहते हैं तुम जानते हो हम मनुष्य से देवता बन रहे हैं तो वह खुशी होनी चाहिए ना. इस पर ही गायन भी है अतीन्द्रिय सुख की भासना गोप-गोपियों से पुछो.

- बाबा कहते है तुम्हें मन्सा-वाचा-कर्मणा पवित्र बनना है. इसमें टाइम लगता है. भल गायन है सेकेण्ड में जीवन मुक्ति, बाप का बच्चा बना और वर्सा मिला. एक बार पहचान कर कहा - यह प्रजापिता ब्रह्मा है. ब्रह्मा वल्द शिव. निश्चय करने से ही वारिस हो जाता है फिर बाप

की याद में भी रहना पड़े. इसमें ही तुम्हारी माया से युद्ध चलती हैं. तुम्हारी आत्मा को पवित्र बनने में ही टाइम लगता हैं.

- बाबा मीठे-मीठे बच्चों को समझाते हैं - तुम्हें यह याद रहना चाहिए कि वह हमारा बाप भी है, सुप्रीम टीचर भी है और सतगुरु भी है.

- बाबा कहते है तुम्हारा नाम ही है - स्वदर्शन चक्रधारी. तो तुम्हें उस पर चिंतन करना चाहिए. तुम हो चैतन्य लाइट हाउस. इस पर ही तुम्हारी महिमा बहुत गाई जाती है. बाप की महिमा तो तुम जानते हो वह है ज्ञान का सागर, पतित-पावन. वही गीता ज्ञान दाता हैं.

- बाबा समझाते है बाप को ग़ॉड फादर कहा जाता है, फिर मात-पिता क्यों कहा जाता है? उसका गुह्य राज है कि वह परमपिता-परमात्मा इस संगमपुग पर आकर ब्रह्मा मुख द्वारा तुम ब्राह्मण बच्चों की ज्ञान देकर रचना करते है. इसलिए ब्रह्मा तुम्हारी माता हो गई. भल सरस्वती भी है परन्तु वास्तव में सच्ची-सच्ची मदर यह ब्रह्मपुत्रा हैं. इस संगम पर ही पहले-पहले सागर-बाप और ब्रह्मपुत्रा का संगम होता है. वह है सभी आत्माओं का बाप और यह ब्रह्मा है तुम ब्राह्मणों की माता.

- बाबा समझाते हैं अब तुम्हें माया पर जीत पाकर कर्मातित अवस्था में घर जाना है. पहले-पहले तुम इस सृष्टि पर सतयुग में आये तब थे कर्म सम्बन्ध में. फिर आधाकल्प बाद तुम कर्म बन्धन में आ गये हो. यह तुम्हीं जानते हो कि हम सम्बन्ध में थे, अभी दुख में हैं फिर जरूर सुख में होंगे.

- बाबा कहते हैं मुझे याद करो तो तुम पवित्र बन जायेंगे. मैं पतित-पावन तुमको पवित्र बना रहा हूँ - घर ले जाने के लिए. फिर शांतिधाम होकर सुखधाम में आयेंगे. यह चक्र अब पुरा होता है. तुम्हारी आत्मा ने ही ८४ जन्मो का चक्र पुरा किया है. अब बाप आये है तुम्हें पतित से पावन बनाने. यह है योगबल. इसे ही तुम्हारी आत्मा पवित्र-पावन बन जायेगी.

- बाबा तुम्हें ड्रामा का एक और राज समझाते है कि इस सृष्टि की कोई भी चीज सदा कायम नहीं है सिवाय एक शिवबाबा के. इस सारी सृष्टि की सभी आत्मायें पावन से पतित बनती है तो प्रकृति भी सतोप्रधान से तमोप्रधान बनती हैं. एक शिवबाबा ही सदा ऐवर प्योर रहते है क्योंकि वही फिर प्योरिफ़ायर भी बनते है पतित को पावन बनाने का. वही आकर सभी आत्माओं और प्रकृति को वापिस पावन बनाते हैं.

ॐ शांति.